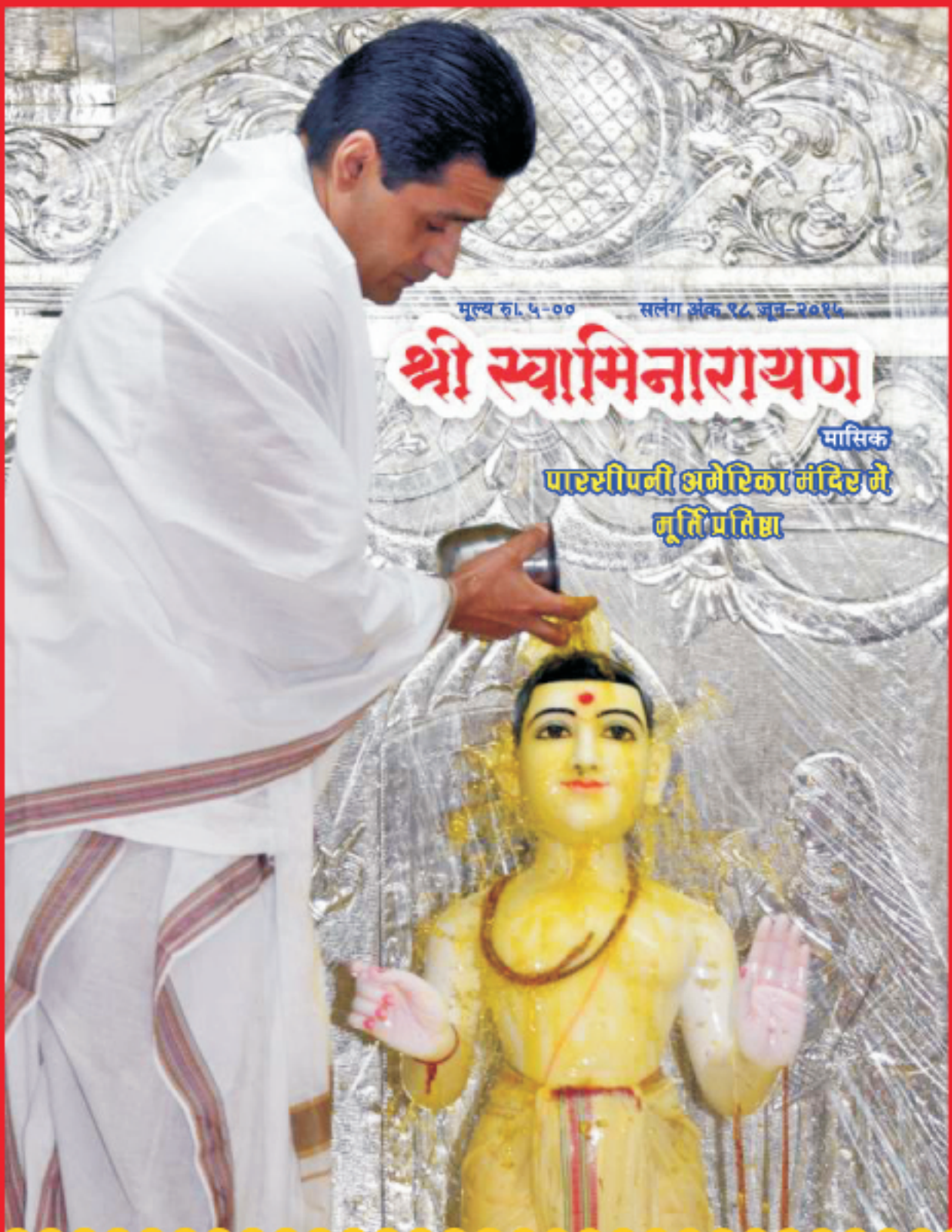

मूल्य रु. ५-०० सलंग अंक ९८ जून-२०१५

श्री स्वामिनारायण

मासिक

पारसीपनी अमेरिका मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१

(१) जरवला मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) जरवला मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर यज्ञ विधिकरते हुये प.पू. महाराजश्री तथा सभा में हरिभक्त । (३) पेथापुर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये तथा सभा में आशीर्वचन देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । (४) विहोकन अमेरिका मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा अन्य सन्त । (५) नारणघाट मंदिर में चल रहा निर्माण कार्य ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : ९८

जून-२०१५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	कुलदेव कष्टभंजन देव	०६
०४.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन में से	०९
०५.	स्वामी ! मेरा कल्याण हो ऐसा बताइये	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो ! हम सभी गरमी के प्रकोप का सहन कर रहे हैं। अपने गुजरात में ४५ डीग्री पारा पहुंच गया है। राजस्थान, पंजाब में ४७ डीग्री पारा सभी को जला रहा है। कितने लोग लू लगने से काल कावलित हो गये हैं । अब तो सभी के घरों में, आफिस में ए.सी.की. सुविधा हो गयी है।

लेकिन गरीब लोग इस प्रचंड गर्मी में भी मजदूरी का काम करते हुये दिखाई देते हैं। सुख दुःख की पीड़ा तो सभी को भोगना पडता है । चाहे जितना भी सुख-दुःख आवे फिर भी भगवान को भुलाना नहीं चाहिये। भगवान हमें प्रारब्धके अनुसार सुख दुःख प्रदान करते हैं । कितने लोगों को सच्चे सुख की व्याख्या की खबर ही नहीं है । हम भगवान से ऐसी प्रार्थना करें कि समय से वरसात हो जाय । भौतिक सुख क्षणिक एवं क्षण भंगुर है। हमें तो सच्चा सुख प्राप्त करना है। आगे अधिक पुरुषोत्तम मास तथा चातुर्मास चालू होगा। सतत चार मास तक अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्रीहरिने जो शिक्षापत्री में आठ नियम की आज्ञा की है उसमें से कोई एक नियम लेना चाहिये । भगवान की भजन में माया अंतराय है। इसलिये भगवान का निरन्तर स्मरण- चिन्तन करते रहना चाहिये । चलते-फिरते उठते-बैठते स्वामिनारायण भगवान के नाम का स्मरण करते रहना चाहिये । हम सभी के प्रारब्धको भगवानने बदल दिया है। यदि हम श्रीजी महाराज की आज्ञा के अनुसार वर्तन करेंगे तो हमारे सभी कल्याण तथा मोक्ष का मार्ग प्रसन्न हो जायेगा। यह अवसर पुनः नहीं मिलेगा।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की (मई-२०१४) रूपरेखा

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर (मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

३ चांदीसणा गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

४ से ६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंदनपुर (कच्छ) पदार्पण ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर लुणावाडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

तथा सायंकाल धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर आयोजित कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

८ से ९ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (प्रसादी मंदिर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज कथा प्रसंग पर तथा सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोलज (कपडवंज) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर विहार कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीरागढ (हालार मूली देश) कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावडा तथा राणीप कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर जरवला मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (खाखरीया) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८-१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मानकुवा (कच्छ) पदार्पण ।

२० से २७ अमेरिका आई.एस.एस.ओ. देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपेनी न्युजर्सी मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२८ से २९ सर्वोपरि छपैयाधाम मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

कुलदेव कष्टभंजन देव

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

त्रेतायुग का सुवर्ण युग चल रहा था । सुमेरु पर्वत की पावन भूमि में वानरो के राजा केशरी अपनी पत्नी अंजना के साथ रहते थे । दोनो का जीवन अतिपवित्र, सदाचार तथा अहिंसक वृत्ति वाला था । उस समय मानव तथा वानर में कोई अंतर नहीं था । दोनो के समान आचार-विचार थे । देवता के समान दंपतीने संतान प्राप्ति के लिये भगवान शिवजी की कठिन आराधना किया । उसी समय अयोध्या के राजा दशरथने भी अयोध्या से नजदीक मनोरमा नदी के किनारे पुत्रेष्टि यज्ञ किया । जिस में यज्ञनारायण प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण करने के लिये एक फल दिये । उस फल में से विभाग करके तीनो रानियों को प्रसाद दिये । उसी फल का एक टुकडा परब्रह्म की इच्छा से देवदूत के रुप में पवन ने जहाँ पर केशरी दंपती तप कर रहे थे उन्हें दिया, उस फल को भगवान शिव की प्रसन्नता जानकर अंजनी जीने उसे खा लिया । यज्ञ प्रसाद के रुप में परब्रह्म परमात्मा कौशल्या से राम के रुप में प्रगट हुये तथा भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न अंशावतार के रुप में प्रगट हुए । इसी तरह अंजनी देवी के उदर से स्वयं रुद्रावतार हुआ । अब हमें यहाँ से हनुमानजी की वात लिखना है । त्रेतायुग में आश्विन कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी तिथी, स्वाती नक्षत्र, मेष लग्न, मंगलवार को अभिजित मुहूर्त में हनुमानजी महाराज का अंजना देवी के पुत्र के रुप में अवतार हुआ । केशरी के पुत्र होने से वे केशरीनंदन कहलाये । पवन देव यज्ञ के प्रसाद को अंजनी तक पहुंचाये इसलिये मारुतीनंदन कहलाये । मारुतीनंदन होने से आकाश मार्ग में चलने की स्वयंभू भक्ति थी । एकवार केशरीनंदन सूर्यग्रहण के समय सूर्य को पकड़ने की बाल लीला की । उस समय सूर्य राहू से ग्रसित थे इसलिए राहू को मुष्टि प्रहार के साथ जमीन पर फेंक दिया । सूर्यग्रहण प्राकृतिक घटना होने से सूर्य मार्ग को रोकने वाले बालक पर इन्द्रने अपने वज्र का प्रहार किया, जिससे उनके मुख में वज्र पहार होते ही वे जमीन पर गिर पड़े । उस समय वायुदेव अपने पुत्र की वेदना देखकर वायु की गति वन्द करदी, जिससे तीनो लोक में वायु के विना हाहाकार मच गया । तत्काल ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के साथ ३३ प्रकार

के देव वायुदेव की प्रार्थना करने लगे । वायुदेव पुत्र के ऊपर आई हुई आपत्ति से बचने के लिये सभी से वचन मांगा कि आप सभी इसकी सदा रक्षा करेंगे । सभी देवों ने सर्वदा रक्षा करने का वचन दिया । भगवान विष्णु अमरत्व तथा चिरंजीवी रहने का वचन दिया । ब्रह्माजीने ब्रह्मास्त्र अर्पण किया । शिवजीने शिवास्त्र अर्पण किया । इन्द्रने वज्र की देह, सूर्यने तेज तथा ज्ञान, यज्ञनारायण ने दीर्घायु, वरुण देव वरुणास्त्र, वरुणजीने गदा, विश्वकर्माने तीनो लोक के पार्षदो से रक्षा, इस तरह ३३ प्रकार के देवताओं ने वरदान की वरसात कर दी । मारुतीनंदन तीनोलोक की शक्ति से परिपूर्ण, सदाचार एवं भक्ति से परिपूर्ण हो गये ।

इन्द्रने वज्र का शरीर पर प्रहार किया था जिससे माता अंजनि उनकी शरीर पर तेल की मालिश करती थी । उसी समय से उन्हें तेल चढाने की परंपरा प्रारंभ हुई । किष्किन्धा पर्वत वनवास की लीला में सीताजी की खोज करते हुए रामलक्ष्मण वहाँ पर पहुंचे, यहीं पर हनुमानजी को राम लक्ष्ण का प्रथम दर्शन हुआ । भगवान राम ने हनुमानजी से सहयोग मांगा तो वे अपनी माता-पिता को छोडकर उनकी सेवा में रहने लगे । स्कन्द पुराण, पंचमखंड, अवंती पर्व में वेदव्यासजी ने हनुमानजी की महिमा का तथा सद्‌गुणों का गान किया है । हनुमानजी के सद्‌गुणों का गान स्वयं शारदा-शेष भी नहीं कर सकते । हनुमानजी आयुर्वेद के ज्ञाता, महायोगी, अष्ट सिद्धिनवनिधिके दाता पराक्रमी, उत्तम सेवक, राम भक्त, ज्योतिषज्ञ, कुशल मंत्री, विश्वासुशु, ब्रह्मचारी, राजनीतिज्ञ, संकटमोचन, ज्ञान गुण सागर, महावीर, विद्वावान, साधुसंत के रखवाले, जैसे अनेकों गुणों के सागर है।

एकवार संतकवि तुलदीसाजी की शरीर में अतिशय पीडा हो रही थी । अनेक प्रकार की औषधिका उपयोग करने पर भी पीडा शांत नहीं हुई तव भगवान रामने दर्शन दिया और हनुमानजी उनकी स्तुति करने लगे लेकिन देह की पीडा दूर करने की वात नहीं किये । उनके शिष्यों ने भी कहा कि प्रभु प्रत्यक्ष विराजमान हैं आप कष्ट दूर करने की प्रार्थना कीजिए तब तुलसीदासजीने हनुमानजी की स्तुति करने की वात की और वे ४० चौपाइयों की एक स्तुति कर दिये जिसे हम हनुमान चालीसा कहते है । इस हनुमान चालिसा के पाठ से हनुमानजी प्रसन्न हो गये और तुलसीदासजी की पीडा को शांत कर दिये । तुलसीदाजीने वरदान मांगा कि इस हनुमान चालीसा का जो भी पाठ करेगा उसके सभी कष्ट दूर कीजियेगा । हनुमानजीने सभी के कष्ट को दूर करने का वचन दे दिया । उसी समय से हनुमान चालीसा का विशेष प्रचार हुआ ।

भारत में सभी से अधिक मंदिरो की संख्या हनुमानजी के मंदिर की है । सीता माता को सिंदूर लगाते देखकर स्वयं अपनी शरीर में सिंदूर लेपन करने लगे । इसी लिये भक्त लोग, हनुमानजी के ऊपर (शरीर पर) सिन्दूर का लेपन करते हैं इससे हनुमानजी प्रसन्न होते हैं ।

हनुमानजी पूर्वजन्म में सीताजी की आठ सखियों में से ''चारु शिला'' नाम की एक सखी थे । यह ''अवधविलाश'' में लिखा हुआ है । इसलिये रामजीने हनुमानजी के दूत को रुप में साथ रखा । वेदोपनिषद में कपि को इग्यारहवां रुद्र कहा गया है । रामरहस्यो पनिषद में कहा गाय है कि लौकिक कामनाओं के लिये मेरे प्रभु राम को विक्षेप नहीं किया जाना चाहिये । मैं भक्तों के कार्य के लिये सदा सर्वदा तत्पर रहूँगा । भागवत में हनुमानजी की भक्ति को नवधा भक्ति में से दास्य भक्ति का शिरोमणी कहा गया है । किसी कार्य के प्रारंभ में हनुमानजी का स्मरण मंगल कारक होता है । पंचमुखी हनुमानजी विशेष अनुग्रहकर्ता है । रामकथा में अवश्य

अखंड विराजमान रहते हैं। शिक्षापत्री श्लोक १२७ में आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को हनुमानजी की पूजा करने के लिये श्रीहरिने आज्ञा की है। जब भी कोई कष्ट आवे तो किसी क्षुद्र देवता के मंत्र का जप न करके हनुमान के मंत्र का जप करने की आज्ञा की है। केशरी नंदन को तेल का दीपक खडीबत्तीवाला करना चाहिये। इस में चार दीपक का उत्तम कहा गया है। कालातिल बहुत प्रिय है। अर्क का हार उन्हें प्रिय है क्योंकि उसे सभी औषधियों का राजा कहा गया है। सिंदूर भी प्रिय है। हनुमानजी को अग्नि का स्वरुप कहा गया है। इसलिये इन्हें शांत करने के लिये गणपतिजी को साथ में रखना चाहिये । मंगलवार जन्म दिन है । शनिवार को हनुमानजीकी पूजा हो तो वे बहुत प्रसन्न होते हैं। हनुमानजी मंदिर की ध्वजा में विराजते हैं। जहाँ पर सुंदर कांड का पाठ होता है वहाँ पर राम सीता लक्ष्मण के साथ हनुमानजी प्रगट होते हैं। हनुमानजी के मंदिर की ध्वजा लाल रंग की होती है जो अग्नित्व का प्रतीक है। हनुमानजी के मंदिर में दीपक करने से मूर्ति योगनिद्रा में लीन हो जाती है। वानर को अतिप्रिय पूंछ लंकादहन के समय हनुमानजी की पूंछ में सीताजी प्रवेश करके हनुमानजी का सहयोग की थी। हाथ में गदा हो तो भीम स्वरुप में भासित होते हैं। गदा नीचे की तरफ हो तो दास के रुप में समझना चाहिये। हनुमानजी को प्रातः नैवेद्य में गुण, श्रीफल, लड्डु प्रिय है । दोपहर में गुण, चुरमा, सुखडी प्रिय है। सायंकाल-आम, केला अमरुद प्रिय है। मंगलवार को चुरमा का भोग लगाना चाहिये। वायुपुत्र होने से सदा हनुमानजी का मुख नैऋत्य कोण में रखना चाहिये। क्योंकि वह वायु की दिशा होती है। ऐसी मूर्ति की पूजा करने से रोग-दोष का नाश होता है। नारद भक्ति सूत्र में हनुमानजी को भक्ति मार्ग का आचार्य कहा गया है। हनुमानजी के मंदिर में चार प्रदक्षिणा करनी चाहिये। रात्रि में निद्रा न आती हो तो हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिये। श्रीहरि के कुलदेव होने से सत्संगी मात्र के कुलदेव हैं। ६ दिन के घनश्याम महाराज की हनुमानजी ने कोटरा राक्षसी से रक्षा किये थे । वन विचरण के समय फललाकर दिये थे। भगवान के सभी मंदिरो में रक्षक के रुप में हनुमानजी को प्रतिष्ठित किया जाता है। जिससे अनिष्ट तत्व मंदिर में प्रवेश नहीं कर पाते। संप्रदाय के इतिहास में संवत १९०५ में आश्विन कृष्ण-५ को गोपालानंद स्वामीने सारंगपुर में कष्टभंजन देव की प्रतिष्ठा की थी।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री अमदावाद शहर के चारो दिशा में हनुमानजी की प्रतिष्ठा की है । जेतलपुर में महल के अंदर बोलने वाले हनुमानजी को प्रतिष्ठित किये। नंद संत भी अनेकों गाँव में हनुमानजी को प्रतिष्ठित किये है । आचार्यश्री तथा नंदसंतो के वचन से आजभी देव हम सभी के कष्ट को दूर करते रहते हैं।

अहमदाबाद तथा वडताल प्रदेश में प्रसादी के मंदिर में तथा तीर्थ भूमि की रक्षा करने के लिये हनुमानजी की पूजा सर्व प्रथम करवाने की प्रथा नंद संतो ने आरंभ की थी । नंद संतो के बाद मारवाड के भक्तिनंदन स्वामीने अनेक स्वरुपों की स्थापना की । अमदावाद शहर में सर्व प्रथम कांकरिया में बालस्वरुप कष्टभंजनदेव की प्रतिष्ठा आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने की थी । हनुमानजी के चरण में शनिदेव का वास है। इसलिये शनिको वे सदा दबाये रखते हैं। इसलिये सत्संगी मात्र शनिवार को या मंगलवार को हनुमानजी की पूजा अवश्य करें। इन दिनो दर्शन करने से भी आपत्ति नहीं आती। इष्टदेव के सेवा पदार्थ को सेवक के रुप में कुलदेव स्वीकारते नहीं है। मात्र संकट के समय याद करने से सभी के संकट को दूर करते हैं।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन में से

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

हर्षद कोलोनी मंदिर के चतुर्थ वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर ता. १७-७-१५ : धर्म शास्त्र सत्संगिजीवन इत्यादि सत्शास्त्रों की रचना श्रीजी महाराज ने नंद संतो से करवाई थी । जिससे कथा का श्रवण करना बड़ी भाग्य की बात है । उस में भी विद्वान संतो के मुख से कथा श्रवण करके जीवन में उतारने से जीवन में परिर्तन आ जाता है । शिक्षापत्री की रचना स्वयं श्रीहरिने की है। शिक्षापत्री में जो भी आज्ञा श्रीहरिने की है उस का पालन करने से सुख की प्राप्ति होती है। नव महा मंदिरो का निर्माण करवा कर उसमें महाराज स्वयं का स्वरुप प्रतिष्ठित किया। श्री नरनारायणदेव तथा हममें थोडा भी फर्क नहीं है यह महाराज का वचन है।

जगत में बड़े बड़े बहुत सारे मंदिर है, संस्थायें है, वहाँ पर भीड़भी बहुत होती है, सभा कार्यक्रमभी होते है, कहीं कहीं खाने का अतिरेक होता है, कहीं मान-संमान का अतिरेक होता, कहींपर भूखे रहकर महिमा का गुणगान होता है। कहीं पर धर्म, कहीं पर मात्र भक्ति, कहीं बरत्याग, वैराग्य तथा ज्ञान की वात तो कहीं पर मात्र मानव सेवा का गुणगान होता है । बड़ी बड़ी शैक्षणिक संस्थाओं में भी लाखो रुपये का खर्च करके अलग-अलग कार्यक्रमो में विद्यार्थियों को संस्कारी बनाने का प्रयत्न किया जाता है, कहीं पर कोई परिणाम दिखाई नही देता। लेकिन हमें उसमें पड़ना नहीं है परंतु आपलोग इतने भाग्यशाली है कि महाराज स्वयं आप सभी को धर्म,भक्ति, ज्ञान, वैराग्य इत्यादि का बेलेन्स एक साथ दिया है । इस लोकमें तथा परलोक में सभी को सुखिया किया है । महाराज का यह अद्‌भुत कार्य है, महाराज हम सभी के लिये खूब पुरुषार्थ किये है। कांटा, पत्थर, गर्मी या बरसात में भी नंगे पैर वनविचरण किये है । उस समय महाराज को किसी ने ऐसा नहीं कहा कि महाराज आप स्लीपर पहन लीजिये महाराज के इस पुरुषार्थ के आगे देखें तो सत्संग में सदा अहोभाव रहता है। संत-हरिभक्तों में गुणग्राहिता रहे तो सत्संग का खूब विकाश हो। दूसरे में दोष दृष्टि देखने से बाद में वह दुःखी होता है। महाराज हम सभी को सुखी रखने के लिये कुछ भी छोड़े नहीं है। फिर भी हम दुःखी होते हैं इसका कारण अपना स्वभाव है। वचनामृत में महाराजने कहा है कि भगवान की पुरुष के ऊपर दृष्टि पडे तो रंक में से राजा हो जाता है, उसी तरह राजा से रंक हो जाता है।

सत्संग का खूब विकास - विस्तार हुआ है। प्रत्येक स्थान पर हमारा पहुँचना बड़ा कठिन है। अपने विस्तार में देखें तो ख्याल आयेगा कि मात्र एक ही मंदिर था कम हरिभक्त थे लेकिन सभी विस्तारो में मंदिर है और अपार संख्या है। यही भगवान की प्रसन्नता का फल है। प्रभुने

जो कुछ दिया है उसे स्वीकारने में सभी का हित है । कथाओं के माध्यम से उसके सुनने से सुख और शांति मिलती है। गुण उतरात है।

म्युजियम में दर्शनके लिये दासभाईने सभी से आग्रह किया तो मेरा भी सभी से अनुरोधहै कि जो एकबार भी म्युजियम में दर्शन करने न गये हों वे अवश्य दर्शन करने जांय। जो दर्शन कर लिये हैं उन्हें बार-बार दर्शन करना चाहिये । कारण यह कि भगवान या भगवान की प्रसादी की वस्तु या भगवान की कथा कभी पुरानी नहीं होती । वही की वही है ऐसा विचार मन में कभी नहीं आने देना चाहिये, ऐसा विचार आने से मंगल नहीं होता। जिस के मन में दर्शन करने का विचार नहीं आवे तो समझना चाहिये कि उसके सत्संग में विमारी आ गई है, जिसके मन में नित्य निरन्तर दर्शन करने की इच्छा हो उसे समझना चाहिये कि वह सत्संग में पूर्ण स्वस्थ है। म्युजियम महाराज की प्रसादी की वस्तुओं का खजाना है । ऐसे खजाने का दर्शन करने से आपको खजाना मिल गया ऐसा समझना चाहिये। प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन में से किसी भी एक प्रसादी की वस्तु का स्थाई मन में भाव रहजाय तो उस जीव का निश्चित ही कल्याण होगा।

इस म्युजियम को बनाने के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री, बड़े पू. पी.पी. स्वामी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी खूब परिश्रम किये है। सभी लोग साथ मिलकर म्युजियम का कार्य पूर्ण किये है, इसलिये सभी को अवश्य दर्शन करना चाहिये।

यहाँ पर एक वात उल्लेखनीय है कि प.पू. महाराजश्री या समग्र धर्मकुल सदा महाराज द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणादि देवों की महिमा का गुणगान करते रहते हैं, संत या शास्त्र की महिमा का वर्णन करते हैं लेकिन शास्त्रों में धर्मकुल की अतिशय महिमा वर्णित है फिर भी महाराजश्री अपने मुख से धर्मवंशी आचार्य की महिमा का गुणगान नहीं करते हैं। यह उनकी महानता है। श्रीजी महाराज तथा धर्मवंशी आचार्यश्री के सद्गुण तथा स्वभाव में यही साम्यता है। स्वयं श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप होते हुए भी कभी भी अपने मुख से अपनी महत्ता बताकर पुजवाते नहीं है महाराजश्री की अंगुली सदा महाराज द्वारा प्रतिष्ठित देवों की तरफ रहती है । अन्यथा इस घोर कलिकाल में कितने पाखंडी स्वयं का भगवान का रुप मानकर पुजवाते हैं। ऐसे पाखंडियों को अबुधलोग भगवान मानकर पूजते भी हैं।

स्वामी ! मेरा कल्याण हो ऐसा बताइये

(दलपत शृंखला-३)

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला
(अहमदावाद)

संवत १८९० वसंत पंचमी को बाल दलपत किशोर दलपतराम बने। १४ वाँ वर्ष पूरा करके १५ वाँ वर्ष प्रारंभ हो गया। मूली में वसंत पंचमी का उत्सव था। वढवाण से हरिभक्त जा रहे थे मामा प्रेमानंद भी जा रहे थे।

दलपत ! तुम्हें मूली उत्सव में आना है ?

हाँ मामा ! हमें आना है, देखने को मिलेगा । तुरंत दलपत तैयार हो गये । लेकिन उनकी माता अमृतबा तैयार नहीं हुई । लेकिन दलपतराम तैयार थे । मां तूं चिंता मत कर, साधु मेरा क्यां करेंगे।

उत्सव में चारो तरफ से मानव मेदिनी भर रही थी । मंदिर के चारो तरफ पर्ण कुटीर करके लोग उसी में रह रहे थे । दलपतराम लिखते हैं कि, वर्तमान में कोई नया मानव स्वामिनारायण मंदिर में आवे तो उसे हवेली इत्यादि दिखाया जाता है । इसी तरह उस समय अलग-अलग साधुओं से उपदेश दिलवाया जाता था।

किशोर दलपतराम को मूली के उत्सव में बहुत कुछ सीखने के लिये मिला। सत्संग सभा में बैठे, कीर्तन सुने, गुप्तगंगा में स्नान किये । आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का दर्शन किये । हरिभक्तों का समूह दिखाई दिया, भाव देखे, भक्ति देखे, स्त्रियों के प्रति मर्यादा देखे, तिलक-चन्दन वाले दिखाई दिये, ब्रह्मचर्य पालन करने वाले संत दिखाइ दिये । मूली के इस उत्सव में दलपतरामने श्री स्वामिनारायण संप्रदाय में श्रीहरि की प्रेरणा तथा प्रजा में सदुपदेश देखा । फिर भी दिल माना नहीं । आंख कहती कि कुछ अपनाने लायक है परंतु मन तथा बुद्धि कहती कि हमें अभी पूछना है । दलपतरामने बुद्धि की स्पष्टता के लिये पांच प्रश्न तैयार किया । सभी संतोके आसनपर जाकर इन पांच प्रश्नों को पूछते हैं।

(१) ईशवर ने अवतार धारण क्यों किया ?
(२) बिना अवतार के वह अपना कार्य नहीं कर सकता ?
(३) कलियुग में अवतार हो ही नहीं सकता ?
(४) हमारे पहले के शास्त्र क्या झूठे हैं ?
(५) इसके अनुसार चलने में अपना कल्याण होगा ?

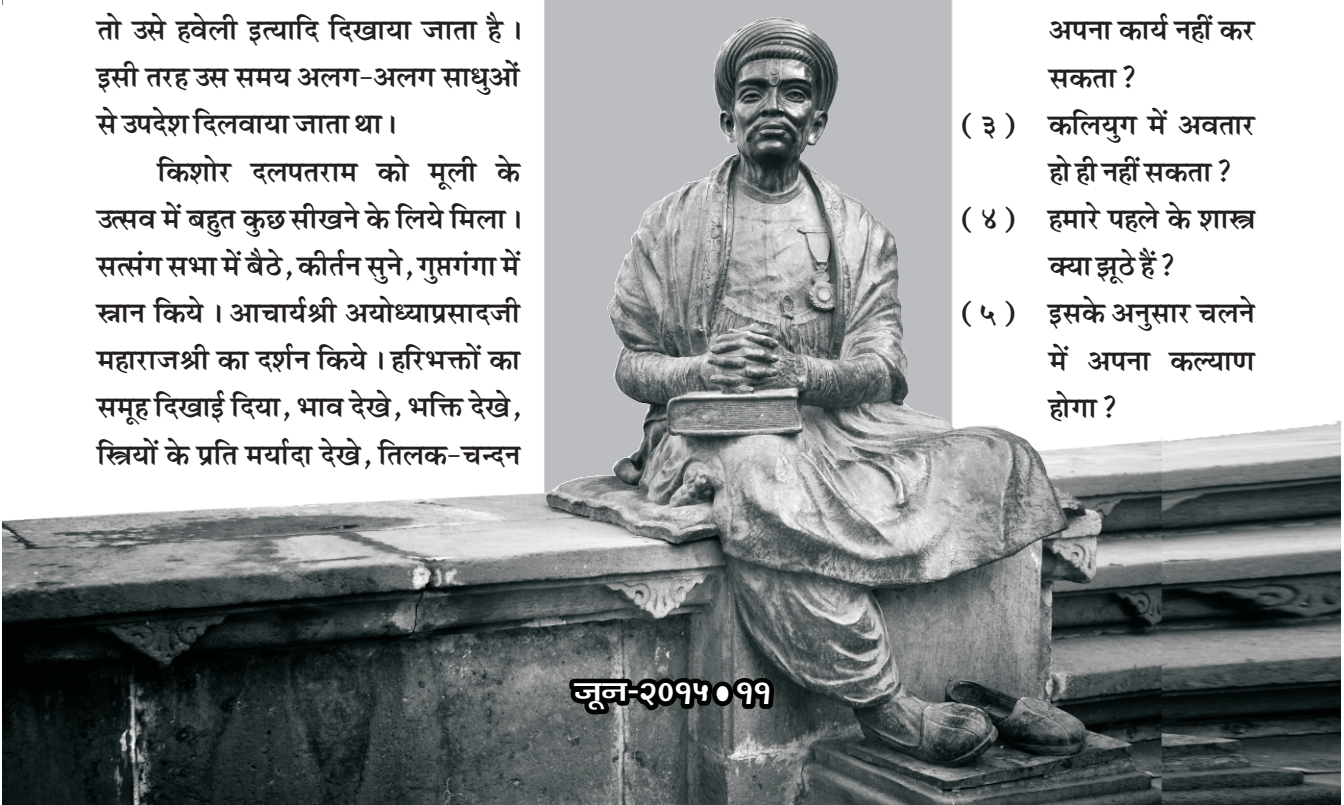

ऐसे प्रश्न सभी से करते, लेकिन मन नहीं मानता था। संतोष नहीं होता था। दलपतराम का अन्तर अभी ऊसर की तरह था। लेकिन ऊसर को हराभरा करनेवाला भी तो है न ?

घूमते फिरते दलपतराम भूमानंद स्वामी के आसन पर आये, वहाँ पर कीर्तन गाया जा रहा था -

सर्वे सरवी जीवन जोवाने चालो रे,
शेरडियों मां आवे लटकंतो लालो रे...
आ जो आव्या भूमानंद ना नाथ रे,

स्वामी कीर्तन गाते सभी साथ में जोड भरते। कीर्तन पूरा हुआ, भूमानंद स्वामी कथा प्रारंभ कर दिये। अंतर में श्रीहरि को धारण करके स्वामी शांत-सौम्य स्वर में उपदेश देने लगे। अरे भाई ! मनुष्य का कल्याण इसी शरीर से हैं। चौराशी लाख फेरे में मोक्ष संभव नहीं है। देवलोक पुण्य फल भोगने के लिये है ''क्षीणे पुण्ये मर्त्य लोके आविशन्ति''। स्त्री धन का त्याग करना चाहिये। यह सहजानंद सूर्य उदित हुआ है - आगे आप लोग कीर्तन गाइये। भूमानंद स्वामी संत थे, कवि थे, कीर्तन बनाते थे, कीर्तन गाते थे। संशय कोदूर करने वाला कीर्तन गाना प्रारंभ किये।

मंदिर मारे आव्या रे, स्वामी सूरज उगाते रे,
वधाव्या में भरी मोतीनी थाल.....
खोयेला दिवसना रे अंग सरवे वध्या रे,
भूमानंद कहे शांति पाम्युं चित्त..... मंदिर मारे।

दलपतराम का तर्क शील मन थक गया और स्वामी के पास पलथी मार कर बैठ गया। अन्तर में परम शांति का अनुभव होने लगा। ऐसा लगने लगाकि हृदय में श्री सहजानंद महाराज का प्रवेश हो रहा हो।

इसके बाद कथा चलती रही, स्वामी बोले, श्रीजी महाराज कहाँ जन्म लिये थे ? कहाँ से इस देश में आये ? लाखों लोगो का कल्याण कैसे किया ? यह सब आश्चर्य नहीं है ? सद्धर्म का सूर्य उदित नहीं हुआ ? जिसे शंका हो वह पूछ सकता है।

वढवान का वह युवान एक ही साथ बहुत सारे प्रश्न पूछ डाला। सभी प्रश्नों का उत्तर स्वामी ने दिया।

भगवान की भाषा मौन है ? कितने अवतार कला अवतार हुए। कितने अंशावतार हुये, श्री कृष्णपूर्णावतार हुए। स्वामीनारायण तो अवतार के अवतारी है। गीता में भगवान ने कहा है कि - ''संभवामि युगे युगे'' धर्मशास्त्र श्रीहरि की प्रेरणा से पर है। लेकिन स्मृति समय - समय से बदल जाती है। श्री स्वामिनारायण भगवान आज के युग में धर्म प्रवर्तन के लिये पधारे है। इन्होंने २१२ श्लोको वाली शिक्षापत्री का प्रणय न करके इसकी आज्ञा में रहने की वात की है और इसी में कल्याण की वात की है।

अत्यन्त धैर्य से जिस तरह सरोवर लहर लेता है उसी तरह बड़ी स्निग्धता के साथ दलपतराम लिखते हैं कि स्वामी की आंख देखकर हृदय में जो शांति का अनुभव हुआ उतना ही उनकी वाणी के सुनने से शांति मिली। ऐसी असरकारक वात कहने वाले ही संत होते हैं। शांति को देनेवाले ही संत होते हैं। दलपतराम जिसकी खोज कर रहे थे वे मिल गये।

आदित्य समय उदय थया स्वामी सहजानंद।
अज्ञान तिमिर टाडवा लई मुनियों ना वृंद।
सत्संग चारे खूण मां कराव्यो, काढी कुसंग।
सतयुग सम धर्म स्थापियो, करीकाल नो भंग।
जीव जई जेनी आगडे जीत्या जुलमी काम।
ए रे एंधाणीने ओडखो भूमानंदो श्याम।

इतना सुनने के बाद दलपतराम के हृदय में धर्मबाण उदित हो गया। दलपतराम स्वयं कहते हैं कि - उपदेश तो मेरे हृदय में बाण की तरह उतर गया। नेत्र से अश्रुजल बहने लगा। स्वामी के पास जाकर कहने लगा कि स्वामी ! हमारा जैसे भी कल्याण हो वैसा किजिये। साधु की जीत हुई, गृहस्थ की हार हुई। तीन दिन तक मूली में रहकर भूमानंद स्वामी से पंचवर्तमान ग्रहण किया। स्वामिनारायण धर्म की दीक्षा लेली। हाथ में जल

देकर स्वामी उपदेश किये - स्वामी का पंचवर्तमान है - निष्काम, निर्लोभ, निःशंक, निःस्पष्ट, निरमान । इसी तरह गृहस्थ के भी पंचवर्तमान है - मद्य, मांस, चोरी, निंदा, व्यभिचार इन सभी का त्याग । स्वामीने मंत्रोपदेश किया और कहा कि स्वामिनारायण का दृढ आश्रय रखना । पंचवर्तमान का पालन करना ? विना गारे पानी या दूधनही पीना । हरिनाम की पांच माला प्रतिदिन करना, नैवेद्य भगवान को रखकर भोजन करना । बाद में भूमानंद स्वामीने दलपतराम को शिक्षापत्री देकर कहा कि सभी शास्त्रों की सार इसमें समाया हुआ है, इसकी आज्ञा के विरुद्ध कोई आचरण नहीं करना ?

दलपतराम स्वामी के निर्मित कीर्तन गाने लगे -

धेर चाली आव्या गोलोक वासी रे,

इस कीर्तन का रहस्य हृदय में उतार लिये ।

जिस धारा से घर से निकले थे वह धारा पीछे छूट गयी और स्वामिनारायण की कंठी तथा तिलक धारण करके स्वामिनारायण के आश्रित होकर अपने मामा के साथ घर आये । १५ वर्ष में जिसे स्वीकार किया वह ७० वर्ष की उम्र में भी भूला नहीं ।

अब दलपतराम आगे लिखते हैं कि - ''मूली से स्वामिनारायण धर्म स्वीकार करके पुत्र घर आया देखकर पिता डाह्यालाल को हुआ कि मेरा बेटा मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया होता तो ठीक था इस तरह स्वामिनारायण के धर्म को वे मानते थे ।

गजब हो गया अब हमारा अग्निहोत्र कार्य कैसे होगा । वेद गया और वंश भी चला गया । स्वामिनारायण संप्रदाय को अंगीकार करनेवाला सही है या पिता ? जिस तरह दशरथराजा एवं रघुवीर के प्रसंग में पितापुत्र दोनो सच्चे थे, उसी तरह यहाँ पर दलपतराम तथा डाह्याभाई यहाँ दोनो सच्चे हैं । लेकिन सत्यार्थ का प्रकाशन हुआ नहीं है, इस का प्रकाशन कठिन भी है । ईश्वर ही करेंगे। (क्रमशः)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

संवत १८८३ ना मागसर सुद-१० वार सने ३ (शनिवार) स्वामी सहजानंदजी लोग लिखितंग दवे हरीशंकर नथुराम जत अमारुं खेतर १ मोजे कोटेश्वर प्रांगणे दश करोईना गामनी सीमनुं वीधा १२) नुं नामे जुनवर छे ते खेतर मोजे मचकुर थी उत्तर दिशाए छे ते भागोले थी खेतरवा १ ने छेटे छे ते खेतर अमदावाद मध्ये श्री नरनारायणदेवलना खरच सारु धरमादा श्री कृष्णार्पण आव्युं छे। ए खेतर न करु छे। ए खेतर ऊपर सरकारनी सीमथी ए खेतरना चारे खूंटनी विगते पूरव दशाए कुंडीवालुं खेतर छे ने पछंम दशाए कोतर छे ने उत्तर दशाए तलावडी छे ने दखण दशाए कुतरीऊ नामे खेर चे ए रीते चारे खूंट वच्चेनुं खेतर धरमादामां आपुं छे ए खेतरनी उपज श्री नरनारायणदेवना मंदिरमां आवे । आखत अमे अमारी राजी रजावतीथी अकल हुंशियारीथी लखी आपुं छुं। ते अमारी पेढी दर पेढी वाली ने तेम जहाँ सुधी नरनारायणनुं मंदिर रहे तां सुधी ए खेतरनी उपज मंदिरमां लो। जहाँ सुधी चांदो सुरज तपे तां सुधी तमने ए खेतर आपुं छे। तमने कोई शखश हरकत करे नहि। ता. ९ डिसम्बर सने १८२६ ना अंगरेजी।

श्रीहरिनी प्रसादी का यह पत्र श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ९ में सभी के दर्शनार्थ रखा गया है। सभी हरिभक्त दर्शन का लाभ अवश्य लें। इस हस्ताक्षर वाले पत्र का दर्शन बड़े पुण्यात्मा को ही होता है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789

नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मई-२०१५

रु. ६०,०००/-	सां.यो. धनबाई हिरजी हालाई - कच्छ, सां.यो. मेधबाई शीवजी केराई-कच्छ कृते हरजी खीमजी हालाई।
रु. ५१,०००/-	प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव प्रंग पर कृते अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब मंडल - प्रेरक नंदलालभाई कोठारी - कृते त्रिभोवनदास पाटडिया परिवार
रु. २१,००१/-	अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहेब मंडल प्रेरक अ.नि. नंदलालभाई कोठारी, कृते जागृतिबहन योगेशभाई शाह
रु. ११,०००/-	श्रीहरि क्रिएशन कृते महंत स्वामी, श्री स्वामिनालायण मंदिर अंजली
रु. ११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल अमदावाद
रु. १०,६००/-	सरजु एसोसीयेट मोटेरा
रु. ९,५००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड
रु. ९,०००/-	स्नेहलकुमार जगदीशभाई पटेल बायड
रु. ८,२००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क
रु. ५,१००/-	डॉ. वसंतवालु - अमदावाद
रु. ५,१००/-	जयंतीलाल मफथलाल पटेल चांदखेडा
रु. ५,१००/-	राजेशभाई खेमाभाई पंचाल टोरडावाला - नरोडा
रु. ५,१००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर २० में पाटोत्सव के निमित्त महादेवनगर
रु. ५,००१/-	तेजस गौतमभाई मफतभाई पटेल - वडु
रु. ५,००१/-	चिराग शंभुभाई पटेल - घाटलोडीया
रु. ५,००१/-	भलाभाई सी. पटेल - अमदावाद
रु. ५,००१/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मई-२०१५)

ता. ३-५-१५	चिराग शंभुभाई पटेल - घाटलोडीया कृते दिनेशभाई ठुम्मर
ता. १०-५-१५	रमेशभाई शांतिलाल दोरडावाला - कांकरिया
ता. १९-५-१५	अ.नि. विनोदभाई पटेल कृते इन्दिराबहन विनोदभाई - शांतिपुरा)कंपा)
ता. २८-५-१५	अशोकभाई प्रभुदास ठक्कर - बोपल

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

ईर्ष्या नारदजी की तरह करनी चाहिये

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

एक महात्माजी थे, उनका नाम नारदजी था । उन्हे सभी जानते हैं । नारदजी कानाम लेते ही सभी को ख्याल आ जाता है । जिस के हाथ में वीणा, मस्तकपर चोटी तथा मुख में नारायण नाम । ऐसे जो हों वे नारदजी हैं । दूसरे एक और ऋषि थे जिनका नाम तुंबरु ऋषि था । तुंबरु ऋषि संगीत विद्या में पारंगत थे ।

एकबार नारदजी नारायण.... नारायण..... करते हुये चले जा रहे थे, इतने में उन्हें तुंबरु ऋषि मिल गये । अरे ! नारदजी ! आज मेरी अहोभाग्य आपका दर्शन हो गया । आप कहाँ जा रहे हैं ? नारदजीने कहा कि इधर कई दिनो से बैकुंठ नहीं गया तो नारायण का दर्शन करने जा रहा हूँ । आपको आना हो तो साथ चलते हैं ।मेरी भी इच्छा थी संयोग से आप मिल भी गये हैं । चलते चलते हैं ।

इस तरह वात करते करते दोनों वैकुंठ की तरफ प्रस्थान किये । वैकुंठ में आकर भगवान का दर्शन किये । भगवान नारायण सुंदर सिंहासन पर शोभायमान हो रहे थे । दोनो महात्माओं का स्वागत किये । बैठने के लिये आसन दिये । तुंबरु ऋषि संगीत कला में प्रवीण थे । भगवान के आगे बैठकर गाना प्रारंभ किये । ऐसा उन्होंने संगीत के साथ गायन किया कि लक्ष्मीनारायण दोनो प्रसन्न हो गये और प्रसन्न होकर भगवान ने अपने वस्त्राभूषण उन्हें भेंट कर दिया । नारदजी बगल में बैठे रहे उन्हें कुछ नहीं मिला ।

नारदजी को तुंबरु ऋषि के उपर ईर्ष्या हो गयी कि उन्हें इतना सुदंर संगीत आता है, जिस के कारण भगवान इन्हे वस्त्रालंकार भेंट में दिये । इसी तरह मैं भी संगीत सीखकर गायन करुं और भगवान को प्रसन्न करुं तभी मेरी सार्थकता है । नारदजी संगीत विद्या सीखने के लिये अथक परिश्रम किये । थोड़ा आया इसके बाद भगवान के पास पहुंग गये और अपनी गान विद्या का भगवान को श्रवण कराया, भगवानने कहा कि नारदजी आप संगीत तो सीखे लेकिन तुंबरी जैसा नहीं आया ।

नारदजी वापस आगये । विचार करने लगे । अब क्या करें ? अब वे शिवजी की आराधना करने लगे । शिवजी प्रसन्न हुये । वे पूछे, नारदजी आपको क्या चाहिये । हमें तुंबरु ऋषि की तरह संगीत विद्या चाहिये । तथास्तु..... । भोलानाथने आशीर्वाद दे दिया ।

नारदजी पुनः वैकुंठ भगवान नारायण के पास पहुंच गये । वहाँ पर उन्होंने मन से संगीतगान सुनाया फिर भी भगवान प्रसन्न नहीं हुये । नारदजी थोड़ा परेशान अवश्य हुए लेकिन हिम्मत नहीं हारे । उन्हे जिससे ईर्ष्या थी उसके पास ही जा पहुंचे । तुंबरु ऋषि से विन्ती करने लगे । आप अपन जैसा हमें संगीत विद्या सिखायेंगे ? अब तुंबरु ऋषिने नारदजी को संगीत विद्या सिखाई ।

नारदजी पुनः नारायण - नारायण ..... करते हुये द्वारिका में पहुंच गये । वहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण के पास बैठकर संगीत विद्या प्रारंभ कर दिये । भगवान नारदजी की संगीत विद्या सुनकर खूब प्रसन्न हुये । अपने वस्त्रालंकार उन्हें भेंट कर दिये । नारदजी भेंट स्वीकार करके अति प्रसन्न हुये । अब वे तुंबरु ऋषि के साथ ईर्ष्या करना बन्द कर दिये ।

यह वात कहकर भगवान स्वामिनारायण इसका महत्व समझाये हैं । भगवान के भक्त आपसमें कभी भी ईर्ष्या न करें । यदि ईर्ष्या करनी हो तो नारदजी की तरह ईर्ष्या करनी चाहिये । जिसके साथ ईर्ष्या करनी हो उसके गुण अपने में लेना चाहिये । दोष हो तो उसका त्याग करना चाहिये । यदि ऐसा नहीं करे तो भगवान के भक्त के ऊपर क्रोधहोने से अहित होने की संभावना रहती है, इस लिये कभी भी ईर्ष्या का भाव नहीं रखना चाहिये ।

प्रिय मित्रो ! स्वामिनारायण भगवान से ऐसी कथा सुनने का आनंद आया न ? किसे ऐसी कथा सुने का आनंद नहीं आयेगा ।

(गढडा प्रथम का चौथा वचनामृत)

●

कौन मूर्ख कौन चालांक

- नारायण बी. जानी (गांधीनगर)

भगवान की भक्ति तथा सत्संग ये दो आत्मारुप पक्षी को मोक्षमार्ग में तथा उन्नति के मार्ग में लेजाने के लिये पंख हैं । इसीलिये श्रीजी महाराज शिक्षापत्री में लिखे हैं कि भक्ति तथा सत्संग के विना चाहे कितना बड़ा विद्वान हो अधोगति का प्राप्त होता है । भक्तिमार्ग में निर्विध्न आगे बढना हो तो संतसमागम एवं सत्संग करना चाहिये । परमात्मा की भक्ति आध्यात्मिक जीवन की आत्मा है ।

मनुष्य की शरीर सुंदर हो लेकिन उसमें आत्मा न हो तो भद्द लगेगी । इसी तरह आधुनिक युग में कितना भी वैज्ञानिक चमत्कार हो लेकिन प्रभु से विमुख होने के कारण निष्प्रयोजन है । सुखकर, शान्तिकर नहीं है ।

किसी का नाम लेकर कहा जाय तो खराब लगेगा, अन्यथा स्पष्ट कहा जा सकता है कि शास्त्र प्रमाणानुसार भगवान को छोड़कर जो भी प्रवृत्ति करता है वह मूर्ख है । श्रीजी महाराज एकवार ऐसा कहे थे कि ''वडोदरा का दीवान मूर्ख है तथा नाथ भक्त बहुत बुद्धिशाली है ।'' इस तरह जगत की दृष्टि से देखेंगे तो वडोदरा का दीवान संपूर्ण गायकवाड़ राज्य की व्यवस्था सम्भालता था और नाथ भक्त तो एक से २० तक की गिन्ती भी नहीं जानता था । लेकिन महाराज का ऐसा अभिप्राय था कि चाहे जितना भी बुद्धिशाली हो यदि भगवान की भक्ति से रहित हो तो वह मूर्ख ही है ।

एकवार कुछ संत-हरिभक्तों के साथ श्रीहरि बोटाद के मार्ग पर चल रहे थे । उन्होंने देखा कि एक व्यापारी अपने तराजू से एख पलडे में कंकड तथा दूसरे पलडे में रेती तौल रहा था । इतना ही नही आने जाने वालों से चिल्लाकर कहता था कि शक्कर ले लो ।

श्रीजी महाराजकी दृष्टि उस तरफ गई । साथ के सत्संगी से प्रभु ने पूछा कि यह कौन है ? ऐसा क्यों करता हैं ? यह सुनकर वर्ती के हरिभक्तों ने बताया कि चीनी-शक्कर का व्यापार करता था उसमें पायमाल हो गया, उस समय से दिमागी खराबी के कारण ऐसा करता है ।

यह वात सुनकर महाराजने कहा कि ''जो लोग भगवान की भजन नहीं करते वे इसी तरह पागल हो जाते हैं । धूल का व्यापार करते हैं । महाराज ने यह

(पेईज नं. २०)

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"सत्संग से बहुत लाभ होतै है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

सत्संग के माध्यम से अपनी वृत्ति तृष्णा रहित होती है । लेकिन उसके लिये शर्त होती है कि इमानदारी से तथा एकाग्रचित्त से एवं श्रद्धा से सत्संग को समझेंगे तो ही लाभ होगा । कथा के माध्यम से सत्संग द्वारा मनोमन्थन करने का अवसर मिलजाता है । अकेले बैठे हों तो और सत्संग सभा में बैठे हों तो दोनो का समन्वय करना चाहिये । अकेले बैठे रहने से अच्छे विचार नहीं आते, सत्संग सभा में बैठे हों तो अन्तःकरण शुद्ध होता है । ऐसा भी विचार नहीं होना चाहिये कि एक ही बार जाने से अन्तःकरण शुद्ध हो जायेगा । अपने रुम में रोज सफाई न करें त धूलजमी रहती है । रुम को बन्द करके रखें तो भी कहीं न कहीं से धूल आही जाती है, उसकी भी सफाई करनी पड़ती है । इसी तरह अपने भीतर भी बाहर की गन्दगी आती है (अर्थात् जगत् के वातावरण की गन्दगी) । जिस तरह रुम की धुल को प्रतिदिन साफ करते है, उसी तरह अन्तःकरण को शुद्ध रखने के लिये सत्संग रुपी झाडु तो लगाना ही पड़ेगा । वह भी प्रतिदिन । सतत श्रवण करने से तथा सत्संग करने से अनन्यता प्राप्त होती है । जब हम किसी वस्तु या व्यक्ति के संपर्क में अधिक आते हैं तभी उसमें प्रीति अधिक होती है । इसी तरह सतत सत्संग करते रहने से परमात्मा के प्रति प्रीति बढती है । इसके बाद वह प्रीति अहोभाव मे परिवर्तित हो जाती है । समूह में सत्संग करने से एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना बढती है । एकाकी बैठे रहने से अगल-बगल के अवगुण अपने में आते हैं । सत्संग करने से अवगुण कम दिखाई देगा गुण अधिक दिखाई देगा । बाद में यह ख्याल आता है कि हम भजन-भक्ति करने में कितने पीछे हैं । भजन करने से अपनी बुद्धि निर्मल होती है । निर्मल बुद्धि मन को आदेश करती है, मन इन्द्रियों को आदेश देता है बाद में इन्द्रियां उस आदेश का पालन करने में सक्रिय हो जाती है । अपना जीवन विचारों पर निर्भर है । जैसा विचार आता है वैसा कार्य होता है ।

सत्संग से संयमित जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है । आहार के विषय में ऐसे ही वात है, खराब खोराक लेने से स्वास्थ्य बिगड़ता है, अधिक खाने से भी स्वास्थ्य बिगड़ता है, इतना कम भी नहीं खाना चाहिये कि शरीर की हड्डी दिखाई देने लगे । शरीर एक साधन है । शरीर स्वस्थ न हो तो कुछ भी करना कठिन है । इसलिये आहार के प्रति सर्वदा जागरुक होकर संयमित जीवन जीना चाहिये । जाने के समय गाडी में पेट्रोल या डीझल कम होतो गाडी बन्द हो जायेगी । ओवर फ्लो हो तब भी बन्द पड़ जायेगी । जिस तरह गाडी कहीं पर पहुंचने का साधन है, इसी तरह शरीर भी एक साधन है । कहां तक पहुंचने का साधन है तो परमात्मा तक पहुंचने का साधन है । इसलिये शरीर की शुद्धता, संयमित आहार, अन्तःकरण की शुद्धता रखेंगे तो परमात्मा तक सरलता से पहुंचा जा सकेगा । हम १० घन्टे सोते हैं तो भी नींद पूरी नहीं होती । हम जो दिन में विचार करते हैं वह रात्रि में स्वप्न में दिखाई देता है । इसलिये शरीर का आहार, मन का आहार तथा इन्द्रियों का आहार सभी शुद्ध रखना चाहिये । इससे शरीर निरोगी रहेगी । व्यर्थ बोलना, सुनना नहीं चाहिये । खराब आचरण नहीं करना चाहिये । जो वस्तु नुक्शान करे उसे ग्रहण नहीं करना चाहिये । जरुरत जितनी हो उतनी रखनी चाहिये ।

संयम से काम लेना तथा संयमित जीवन जीना । जिस तरह नट अपनी नजर को बीचो बीच केन्द्रित करके चलता है उसी से उसका संतुलन बना रहता है, इधर-उधर नहीं देखता, यदि देखे तो नीचे गिर जायेगा, इसी तरह हमें मध्य केन्द्र में प्रभु को रखकर चलना है अन्यथा पतन होने की पूरी संभावना है । जब सारा जगत सो जाता है तब योगी जगता रहता है । ऐसा नहीं कि वह बैठा रहता है, या खड़ा रहता है, तप करता रहता है, वह भी सोया ही रहता है लेकिन उस शयन की स्थिति में अन्तर की ज्योति को जागृत रखता है । योगी का जीवन इतना संयमित रहता है कि विचार की शुद्धता से वह शयन करते हुये भी जागृत रहता है । व्यक्ति अज्ञान के कारण खराब काम करने में हचकता नहीं है । लेकिन योगी के मन में खराब विचार शयन के समय यदि आवे तो जग जाता है । योगी सदा चैतन्य रहता है । उसे जगत का विचार नहीं आता है यदि आभी जाता है तो बड़ी सतर्कता से उससे बाहर निकल आता है । कितने लोग ऐसा कहते हैं कि परमात्मा अंदर बैठा है तो मंदिर करने की क्या आवश्यकता ? मंदिर ध्यान का केन्द्र है । भगवान तक पहुंचने का लक्ष्य हो तो प्रयत्न करना पडेगा । हमें जहाँ जाना होता है वह स्थान पहले से निश्चित करना पड़ता है । उसी रास्ते पर चलना पड़ता है । मन में मात्र विचार करने से कभी वहाँ पहुंचना संभव नहीं है ।

परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग मंदिर है । इस सरल मार्ग का सहारा सभी को लेना चाहिये । जगत में अधिक आसक्ति ठीक नहीं, वह बन्धन का कारण है, अशांति का कारण है शान्ति चाहिये तो सत्संग एवं मंदिर का सहारा लेना चाहिये । जगत में बहुत पुरुषार्थ करने से भी परमात्मा बहुत देते हैं ऐसी विचार धारा ठीक नहीं । कदाचित परमात्मा दया करके अधिक सांसारिक व्यवस्था दे भी दे तो वह स्थाई तो है ही नहीं । वह कदाचित रह जाय तो हम स्थाई नहीं हैा । जो शास्वत नहीं है, जो अल्प है, उसकी हमें बहुत चिन्ता रहती है । मृत्यु के बाद भी हमें जिसके पास रहना है, अनंत सुख जिस में समाया है उकका चिन्तन करके आत्म सर्पित भाव से प्रभु की भजन करते रहना चाहिये । जीवन की यात्रा में यदि प्रभु की तरफ की यात्रा होगी तो निश्चित ही सार्वत्रिक सफलता मिलती रहेगी । सदा लक्ष्य निर्धारित करके चलने में लक्ष्य की प्राप्ति के साथ मन की शांति, सुख सबकुछ उसी में समाया है ।

●

"सुख महाराज की मूर्ति में है, जगत में नहीं"

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

''नाशवंत आ देह वडे थी अविनाशी फल लेवुं जी,
पत्राडाने जमी करीने बहार फेंकु देवुं जी ।''

देह मात्र चैतन्य का उपकरण है । चैतन्य का मात्र वस्त्र है । जीव, पूर्व में भी अनेक शरीर धारण किया है । अनेक की गोंद में खेला है । जिस तरह वस्त्र जीर्ण होने पर उसे त्याग कर नूतन वस्त्र धारण कर लिया जाता है, उसी तरह चैतन्य भी शरीर त्याग कर नूतन शरीर को धारण करता है, अर्थात् दूसरा जन्म धारण करता है । ऐसे इस नाशवंत देह के प्रति मोह कैसा ? इस देह से सम्बंधित लोगो से मोह कैसा ?

एक वात सनातन सत्य है, कि जब तक देह है तब तक देह के संबंधी है । पंच भौतिक यह देह क्षणिक एवं नाशवंत है । इस शरीर का कोई भरोसा है ? जब शरीर का कोई भरोसा नहीं है तो शरीर के संबंधी लोगों का संबंधकितने समय तक ? कोई निश्चित नहीं । शरीर का उपयोग मात्र शरीर के सम्बन्धियों के लिये नहीं है ।

सत्संग करके यह वात समझकर जीवन में दृढता के साथ मन में उतार लिया हो तो पीछे की अवस्था में खूब उपकारक बनता है । अन्यथा जैसे-जैसे समय वीतता है, अवस्था ढलती है उसी तरह देह तथा देह के सम्बन्धी पदार्थो में अतिशय प्रेम बढता जाता है ।

''हेत ना तातणामां जीव खूचतो ज जाय.....

मां हेत वधतुं ज जाय.....।''

उसमें भी जिस को एक ही सन्तान हो तो उसमें अधिक प्रेम होता है। पुत्र के घर पुत्र का जन्म हो तो उससे भी अधिक प्रेम हो जाता है। जिस तरह मूली धन की अपेक्षा व्याज में अधिक प्रेम होता है, ठीक वैसे ही। इसी तरह अधिक प्रेम रहेगा तो वासना बढती जायेगी, ऐसा नहीं रहेगा तो उतरते जीवन में साधना मार्ग पुष्ट होगा, अन्यथा पिछला जीवन कष्टकर होगा।

श्रीजी महाराज गढडा अंतिम प्रकरण के ३८ वें वचनामृत में कहे हैं कि ''छो वानां होय तेने जीवते के मरीने सुख थातुं नथी''। उस दो वाना में महाराज संबन्धियों के साथ प्रेम की गिन्ती किये है।

देह या देह के सम्बंधी को शत्रु मानना ऐसी वात नहीं है। परंतु उसमें बहतु प्रेम नहीं रखना चाहिये। जिस प्रेम के कारण उसमें बन्धन हो या महाराज भुला जांय ऐसा प्रेम नहीं करना। जिस सम्बन्धसे जन्म-मरण का चक्र चालू रहे, अन्तर में वासना रह जाय ऐसा प्रेम तो नहीं ही करना चाहिये। श्रीजी महाराज ने वडताल के ९ वें वचनामृत में कहा है कि ''चिदाकाश ने मध्ये सदाय भगवाननी मूर्ति विराजमान छे, मूर्तिने विषे ज्यारे समाधिथाय त्यारे एक क्षण मात्र भगवान ना स्वरुपमां स्थिति थई होय, ते भजन ना करनारा ने एम जणाय जे हजारो वर्ष पर्यन्त में समाधिने विषे सुख भोगव्युं। एवी रीते भगवानना स्वरुप संबन्धी जे निर्गुण सुख ते जणाय छे अने जे मायिक सुख बहु काम भोगव्युं होय तो पण अंते क्षण जेवुं जणाय छे। माटे भगवानना स्वरुप संबन्धी जे निर्गुण सुख छे ते अखंड अविनाशी छे। ने जे मायिक सुख छे ते नाशवंत छे।

एक मात्र महाराजकी मूर्ति में सुख समाया है। महाराजने अब हम सभी को उत्तम समय प्रदान किया है, उस समय का सदुपयोग कर लेना चाहिये। महाराज के स्वरुप में अपने मन को लगाने का प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा विचार करते रहना चाहिये कि महाराज की मूर्ति के प्रति कैसे अधिक स्नेह बढे अखंड स्मृति बनी रहे, अधिक से अधिक समय भगवद् भक्ति में बीते इसके लिये सतत प्रयत्न शील रहना चाहिये। इसके अलांवा महाराज की सेवा पूजा के लिये समय निकालकर निवृत्ति का समय भोगना चाहिये।

(अनु. पेईज नं. १७ से आगे)

स्पष्ट कर दिया कि चाहे जैसा भी चालांक हो वह भगावन की भक्ति से रहित है तो पागल ही है। भगवान का भक्त थोडा कम पढा हो और भक्त हो तो वह बुद्धिमान है।

इस वात का विस्तार तो प्रथम प्रकरण के ५० वे वचनामृत में है ''जो कल्याण ने अर्थे जतन (प्रयत्न) करे छे ने तेनी बुद्धि थोडी छे तो पण ते कुशाग्र बुद्धिवालो छे अने जे जगत व्यवहार मां सावधान थईने मंड्या छे. तेनी बुद्धि अति झीणी छे तो पण ते जाडी बुद्दिवालो छे।

हम ऐसा मान लेते हैं कि मेन्टल हास्पिटल में जितने रोगी है उनते ही पागल हैं ऐसा नहीं है, गाँव-गाँव में तथा घर-घर में पागल हो सकते हैं। कोई धरती के किसी दोर से हीरा-पारसमणी लावे या स्वतः प्राप्त करले लेकिन परमात्मा या परमात्मा की भक्ति-उपासना नहीं करता हो तो सब कुछ प्राप्ति के बाद भी सब व्यर्थ है।

इसलिये हे बाल भक्तों ! इस वात का विचार करके स्वयं में विचार करना चाहिये कि हम कैसे हैं ? धीरे-धीरे दृढता के साथ अपने भीतर कभी देखते हुये श्रीहरि के वचन में विश्वास रखकर प्रयत्न करते रहना चाहिये और विचार करते रहना चाहिये कि भक्त बनने के बाद कौन चालाक है ? और कौन मूर्ख है ?

सत्संग समाचार

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में श्रीहरि अंर्तधान तिथि सम्पन्न हुई

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदि कालुपुर में ज्येष्ठ शुक्ल-१० ता. २८-५-१५ को प्रातः ८-३० बजे प्रसादी के सभा मंडप में पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी इत्यादि पूज्य संत एवं हरिभक्तों की उपस्थिति में स.गु. शास्त्री स्वामी छपैयाप्रसादजी के वक्तापद पर स्वामिनारायण भगवान की अंतधान तिथि के निमित्त कथा का तथा महामंत्र धुन का आयोजन किया गया था।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर (खाखरिया)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा स.गु. स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से खाखरिया विस्तार के मणीपुर गाँव में १०१ वर्ष पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार करके १४-५-१५ से १६-५-१५ तक भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया गया। जिस में यज्ञ, पोथीयात्रा, श्रीमद् सत्संगिजीवन त्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया। गाँव में ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई थी। ता. १६-५-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री घनश्याम महाराज की तथा श्री नरनारायणदेव एवं श्री राधाकृष्णदेव की प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी।

इस प्रसंग पर अनेक धामो से संत महंत पधारे हुये थे। जिस में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी मूली के महंत स्वामी, नारायणघाट, गांधीनगर, नारणपुरा, प्रयाग, माणसा, जयदेवपुरा गुरुकुल इत्यादि धामो से संत पधारकर अमृत वाणी का लाभ दिये थे। खाखरिया विस्तार का प्रतिनिधित्व करने वाले रतीलाल पटेल आत्मीयजनो के साथ पधारे थे। इस प्रसंग पर मार्गदर्शन छोटे पी.पी. स्वामी तथा महंत देव स्वामी दे रहे थे।

(धनवंत बी. पटेल)

डीसा (बनासकांठा) श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से उनके शिष्य शा. नारायणमुनिदासजी के मार्गदर्शन में डीसा श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४ वाँ पाटोत्सव ता. ८-५-१५ को धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से नारायणमुनि स्वामी, शा. राम स्वामी, शा. सिद्धेश्वरदासजी (माणसा), शा. सत्यसंकल्पदासजी, चन्द्रप्रकाश स्वामी, इत्यादि संत इस अवसर पर पधारकर कथा करके तथा षोडशोपचार ठाकुरजीकी पूजा करके सभी को आनंदित किये थे।

(उर्मिक पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा २३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से कालुपुर के स्वा. धर्मजीवनदासजी के हाथों ठाकुरजी का पाटोत्सव विधिकी गयी थी। प्रातः प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री राधाकृष्णदेव तथा धनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक किया गया था।

प्रासंगिक सभा में अमदावाद, गांधीनगर, ईडर, सोकली, सापावाडा, जेतलपुर, अंजली, माणसा, सिद्धपुर इत्यादि स्थानों से संत पधारकर प्रसंगोचित प्रवचन किये थे। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। समग्र आयोजन स्वा.

धर्मप्रकाश स्वामीने किया था । पाटोत्सव के यजमान प.भ. पसाभाई एम. पटेल तथा प.भ. जयंतीभाई अंबालाल पटेल परिवार तथा यजमान परिवार ने प.पू. बड़े महाराजश्री पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । अन्य सेवा में श्री कनुभाई, श्री हरेशभाई, श्री सुमनभाई तथा श्री तुलसीभाई थे । हजारो भक्त दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था।

(धर्मप्रवर्तक स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी - पंचम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.भ. दासभाई ट्रस्टी मंडल के साथ आयौजन करने से पांचवे पाटोत्सव के अन्तर्गत श्री लालजीभाई पी. डोबरीया तथा अन्य हरिभक्तों के यजमान पद पर ता. ४-५-१५ से ता. १०-५-१५ तक स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था । बहनों को दर्शन का सुख देने के लिये प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । ता. १०-५-१५ को महापूजा प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर आरती उतारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । उसी दिन सायंकाल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर कथा की पूर्णाहुति करके सभाजनों को आशीर्वाद दिये थे । अनेक धामों से संत पधारे थे जिस में कालुपुर, जेतलपुर, गांधीगनर, कांकरिया, एप्रोच मंदिर से संत प्रतिदिन पधारे थे । युवक मंडल द्वारा ''धर्मराजा नो दरबार'' नामक सुदंर प्रेरणात्मक नाटक प्रस्तुत किया गया था। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार दशाब्दी महोत्सव तथा भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर कनखल - हरिद्वार के दशाब्दी महोत्सव के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन ता. ३०-४-१५ से ता. ४-५-१५ तक किया गया था ।

स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने सुंदर कथा अमृतपान कराया था । पारायण के यजमान अ.सौ. शारदाबहन मुकेशभाई पटेल कृते डॉ. भावेशभाई तथा कल्पेशभाई एडवोकेट (गांधीनगर) परिवारने लाभ लिया था । सतत पांच दिन तक गंगा मैया के किनारे बैठकर कथा श्रवण करके भक्तभाव विभोर हो गये थे ।

स.गु. को. नारायणमुनिदासजीने सुंदर सभा संचालन किया था । समग्र प्रसंग में पी.पी. स्वामीका मार्गदर्शन था । ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक अन्नकूट आरती संतो द्वारा की गयी थी । पूर्णाहुति प्रसंग पर बहुत सारे संत एवं सा.यो. बहने उपस्थित थी ।

(अनिलभाई वावोल)

अन्नकूटधाम आदरज में तृतीय पाटोत्सव एवं पारायण

श्रीहरि के चरणों से पवित्र भूमि आदरज गाँव में श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर का तृतीय वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से ता. ६-५-१५ से ता. १०-५-१५ तक संपन्न हुआ था ।

इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । इस प्रसंग पर दशगाँव गोल तथा अगलबगल के गाँव के हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा किये थे । आगामी वर्ष के पाटोत्सव के यजमान की घोषणा की गयी थी ।

पाटोत्सव के पवित्र अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूटआरती उतारकर सभा में पधारे थे । प्रासंगिक सभा में महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी इत्यादि संतोने प्रेरक प्रवचन किया था । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा संचालन छोटे पी.पी. स्वामीने किया था । युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वक्तापुर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण वक्तापुर में ता. १९-४-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया गया था।

इस प्रसंग पर ता. १७-५-१५ से १९-५-१५ श्री घनश्याम चरित्र की त्रिदिनात्मक कथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने की थी। त्रिदिनात्मक विष्णुयाग भी किया गया था। जिस में सभी गाँव के यजमान यज्ञ का लाभ लिये थे।

ता. १८-४-१५ मूर्तियों की नगरयात्रा निकाली गयी थी। ता. १९-५-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री जब पधारे तब भव्य स्वागत किया गया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा करके यज्ञ की पूर्णाहुति किये थे। इस प्रसंग पर छोटे-बड़े सभी यजमान का प.पू. आचार्य महाराजश्री सन्मान करके श्री नरनारायणदेव का स्वरुप भेंट दिये थे।

इस प्रसंग पर स्वा. छपैयाप्रसाददासजी, स्वा. हरिजीवनदासजी, स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, अमदावाद से महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, छोटे पी.पी. स्वामीने सुंदर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा मथुरा के महंत स्वामीने किया था।

समग्र प्रसंग में युवक मंडल तथा छोटे-बड़े भक्तों का एवं हरेशकुमार मफतलाल पटेल इत्यादि भक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी। इसके साथ मथुरा के पुजारी विश्वेश्वरदासजी तथा मनोजभाई भी सेवा में लगे रहे। बाहर गाँव के भक्त समिती के सदस्य तथा कोठारीने भी मिलकर सेवा की थी। (को. सर्वेश्वरदासजी मथुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड ६ठ्ठा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से बायड श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६ठ्ठा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक किया गया था। प.भ. को. जगदीशभाई प्रेमजीभाई पटेल के नूतन बंगले में प.पू. बड़े महाराजश्रीने पदार्पण किया था। पाटोत्सव के सभी यजमानो को प.पू. बड़े महाराजश्रीने पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद दिया था। प्रासंगिक सभा में को. जे.के. स्वामी तथा शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने प्रासंगिक उद्बोधन दिया था। अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने सभा संचालन किया था। शा. छपैयाप्रसाददासजी तथा मथुरा के पुजारी स्वामीने सुंदर सेवा की थी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने भी सुंदर सेवा की थी। (को. सर्वेश्वरदासजी - मथुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आनंदपुरा का ११ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. सिद्धेश्वरदासजी (माणसा महंत) की प्रेरणा से तथा आनंदपुरा गाँव के समस्त हरिभक्तों के सहयोग से मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज का ११ वाँ पाटोत्सव ता. २८-४-१५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न किया गया था। इस उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण शा.स्वा. सिद्धेश्वरदासजी तथा स्वा. माधवप्रियदासजी के वक्तापद पर हुआ था। ता. २८-४-१५ को बहनो को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। ता. २७-४-१५ को श्री जीतुभाई द्वारकावाला द्वारा रात्री में सत्संग डायरा किया गया था। ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूटोत्सव किया गया था। अनेक धाम से संत पधारकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। (माधव स्वामी - माणसा)

हिंमतनगर देश के गाँव में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ गाँवों में सर्व प्रथमवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने विचरण किया था। सर्व प्रथम मंदिर में आरती करके - करणपुर, बेरणा, वीरा वाडा, कांकठोल, नवा आदि गाँवो में पधारकर हरिभक्तों को आनंदित किये थे। यजमान नरेन्द्रकुमार भगुभाई पटेल के यहाँ पधारकर सभा में पधारे। सभा में नये अनेक मुमुक्षुओं को गुरुमंत्र दिये और पूजा पेटी प्रदान किये। धर्मकुल के आशीर्वाद से सभी गाँव का हरिभक्त प्रसन्न है।

(रमेशभाई पटेल, अरोडा)

हिंमतनगर में भव्य महिला शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से हिंमतनगर में ता. १२-४-१५ को सुंदर महिला सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था। जिस में जेतलपुर में सां.यो. नर्मदाबा, इत्यादि बाइयो ने कथा का लाभ दिया था । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। (संगीताबहन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में हिंमतनगर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल ने नियम, निश्चय के साथ भगवान से संबन्धित तथा धर्मकुल महिमा के साथ कथा-वार्ता का लाभ दिया था। अन्त में संध्या आरती के बाद प्रसाद ग्रहण करके सभी प्रस्थान किये थे। (प्रकाशभाई सोनी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर मंदिर के आनेवाला दशाब्दी महोत्सव (कार्तिक कृष्ण-२) के उपक्रम में अलग-अलग कार्यक्रम में मूली देश के खेराणी-लीमली गाँव से सुरेन्द्रनगर मंदिर तक पदयात्रा में विशाल हरिभक्तों के साथ कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी आदि संत महामंत्र, धून,भजन, कीर्तन करते जुडे थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

मूली देश के गाँवो में अखंड महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर मंदिर के आनेवाला दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में मूली देश के १२५ गाँवो में १२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का आयोजन किया गया है । भक्तिनगर सरा, इंगरोला, लीमडी, टीकर, खोलडीयाद, गुंदीवाला, रामपरा, टींबा, शियाळी इत्यादि गाँव में धूनका भव्य आयोजन किया गया था। पश्चात सत्संग जागृति के लिए सभा की गई थी । इस अवसर पर कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, भक्तिहरि स्वामी, व्रजवल्लभ स्वामी, घनश्याम स्वामी, नित्यप्रकाश स्वामी और शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजी आदि संतोने सर्वोपरि भगवान का महात्म्य और धर्मकुल की महिमा का वर्णन कथा द्वारा किया था।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

चराडवा मंदिर में विसाल सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ४३ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में प.पू. लालजी महाराजश्रीने आज्ञा आशीर्वाद से यहाँ के महंत स.गु. स्वामी उत्तमप्रियदासजी तथा शास्त्री ब्रह्मविहारीदासजीने दिं. १२-३-१५ को समस्त चराडवा सत्संग समाज कि विशाल सत्संग सभा का आयोजन किया था। जिस में अधिक मात्रा में सत्संगि उपस्थित रहे थे। इस अवसर पर मूली मंदिर के स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी, मूली के सूर्यप्रकाश स्वामी, पूजारी प्रेमवल्लभ स्वामी, लींबडी महंत शा. ज्ञान स्वामी, जीष्णु स्वामी, हळवद के श्रीजी स्वामी और प्रभुजीवन स्वामी आदि संतोने भगवान तथा धर्मकुल का महिमा बताया था और

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४३ वें प्रागट्योत्सव की संपूर्ण जानकारी महंत स्वामीने दी थी । हरिभक्त भी संतो की वाणी से खूब प्रसन्न हुए थे ।

समग्र अवसर पर पू. महंत स्वामी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुदंर आयोजन किया था। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल चराडवा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी न्युजर्सी (छपैयाधाम) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १७ से २४ मई २०१५)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद तथा जेतलपुर धाम के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा मार्गदर्शन से न्युजर्सी के पारसीपनी (छपैयाधाम) में भव्य मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण होते दि. १७-५-१५ से २४-५-१५ तक प.भ. जनकभाई बाबुभाई पटेल (उवारसदवाले) के यजमान पद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह श्री योगेन्द्रभाई भट्ट के वक्तापद पर हई थी । समग्र अवसर पर स.गु.शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) ने सुंदर सभा का संचालन किया था । काकंरिया मंदिर के शा. यज्ञप्रशाददासजीने कार्यक्रमकी रुपरेखा समझाई थी । सभा में आई.एस.एस.ओ. के चेप्टरो से पधारे संतो का पूजन किया गया है । महाप्रसाद की सुंदर व्यवस्था की गई थी । अंतिम तीन दिन भोजन की व्यवस्था चेरीहील मंदिर के हरिभक्तोने के थी । दि. २०-५-१५ की कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया था । २२-५-१५ को रुक्मिणी विवाह मनाया गया था । सभा में प्रतिदिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. शा.आत्मप्रकाशदासजी आदि संत पधारे थे । २२-५-१५ को सायं श्री नरनारायणधेव युवक मंडल द्वारा श्रीमति दक्षाबहन पटेल ने कल्चर प्रोग्राम किया था । सुदंर बाल लीला प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था । २२ से २४ तक विष्णुयाग हुआ था । २३ को शनिवार को सुंदर रासोत्सव किया गया था ।

दि. २४-५-१५ को रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के हाथो से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे धामधूम से संपन्न हुई थी ।

प्रासंगिक सभा में संतो की अमृतवाणी के बाद यहाँ के मेयर और काउन्सीलरने पधारकर उद्भोदन किया । प.पू. बड़े महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । पू. श्री योगेन्द्रभाई भट्ट (कथाकार) द्वारा हरिभक्तोंने मंदिर केलिए सुंदर चंदा एकत्र किया था । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रसन्न होकर खूब आशीर्वाद दिये थे । (प्रहलादभाई वी. पटेल)

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

શ્રી નરનારાયણદેવનો મહાભિષેક અન્નકૂટ

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણ નમઃ ॥

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞા-આશીર્વાદથી
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુરમાં

પવિત્ર અધિક પુરુષોત્તમમાસમાં

અધિક અષાઢ સુદ-૩ ત્રીજ તા.૧૯-૬-૨૦૧૫

મંગળા આરતી સવારે : ૫-૩૦ કલાકે
મહાભિષેક સવારે : ૬-૩૦ થી ૭-૦૦ કલાકે
શણગાર આરતી સવારે : ૮-૩૦ કલાકે
અન્નકૂટ દર્શન તથા રાજભોગ આરતી સવારે : ૧૦-૩૦ કલાકે
અન્નકૂટ દર્શન સવારે : ૧૦-૩૦ થી ૧-૦૦

યજમાન : અ.નિ.પ.ભ. નાથજીભાઈ ઈચ્છારામ શુકલ તથા
અ.નિ. પ.ભ. ઈશ્વરલાલ લાભશંકર પંડ્યા
શિષ્ય મંડળ

આયોજક : સ.ગુ. મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી, શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ.

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर : स.गु. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गु. शा.स्वा. देवचरणधासजी (वे.व्या.आ.) ज्येष्ठशुक्ल-११ ता. ३०-५-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : प.भ. प्रागजीभाई नरसिंहभाई तडावीया (पीठवाझाड) ता. २५-४-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

लेस्टर-यु.के. : प.भ. मोहनभाई जेराम काचा (माडामोरा मूली देश) ता. १-५-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

ट्रेन्ट, ता. मांडल : प.भ. लीलाबहन कांतीलाला (उम्र ७०) ता. ७-५-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मोरवासण : प.भ. पटेल नाथाभाई जीवीदास ता. ७-५-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : अमदावाद सोनी समाज के अग्रणी सत्संगी झिन्झुवाडिया परिवार के अग्रगण्य प.भ. हरगोविंदभाई सोनी पोपटलाल झिन्झूवाडिया (उम्र ९०) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये ता. ८-५-१५ को अक्षरनिवासी हुये हैं।

टींबा, ता. वढवाण : प.भ. धनीबहन वचाणभाई परमार ता. २४-५-१५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) सर्वोपरि छपैयाधाम में पाटोत्सव प्रसंग पर बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा यजमान प.भ. गंगारामभाई परिवार प.पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करते हुये ।(२) छपैयाधाम में नूतन आधुनिक धर्मशाला का खात पूजन करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में लाभ लेते हुये प.भ. लक्ष्मणभाई राघवाणी परिवार ।(३) डीसा मंदिर में १४ वें पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।(४) नारणघाट मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का चन्दन चर्चित दर्शन ।(५) मेघाणीनगर मंदिर रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री को २५ फूट का हार पहनाकर पूजन करते हुये हरिभक्त तथा प.पू. महाराजश्री की उपस्थिति में उद्‌बोधन करते हुये पी.पी. स्वामी (गांधीनगर)(६) अमदावाद मंदिर के सभामंडप में पू. महंत स्वामी तथा ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा शा. मुनि स्वामी साथ में धर्मादाकी सेवा करते हुये माणेकपुर (चौधरी) गाँव के हरिभक्त ।

Registered under RNI NO-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd. PSO on 11 the every month under postal REG. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd. valid up to 31-12-2017

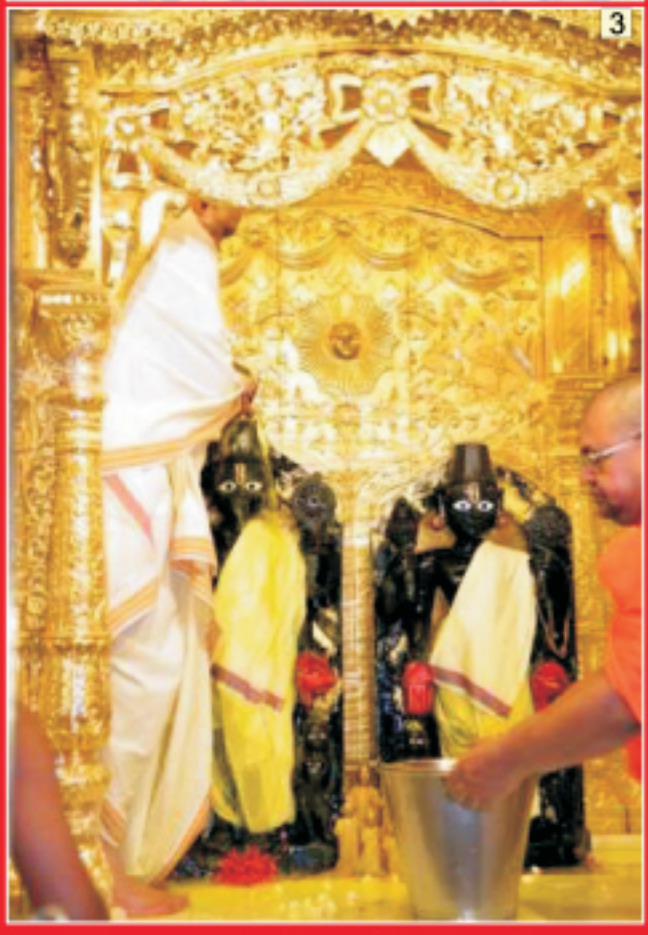

(१) पारसीपनी अमेरिका मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) पारसीपनी मंदिर के सभा में वहाँ के मेयर प्रासंगिक प्रवचन करते हुये । (३) अमदावाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव को केशर स्नान कराते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । (४) मणीपुर (खाखरिया) मंदिर में प्रतिष्ठा करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (५) मणीपुर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में सत्संगिजीवन कथा का पान कराते हुये शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ।

Praful Kharsani